3 अपनी वस्तु

एक महात्मा जी कहीं जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक स्थान पर दो व्यक्तियों को ऊँची आवाज़ में बोलते सुना। दोनों ही हाथों में लट्ठ लिए एक–दूसरे के प्राण लेने को उद्यत दिखाई देते थे। एक कहता था कि यह भूमि मेरी है और मैं इसका स्वामी हूँ, जबकि दूसरा उस भूमि को अपनी बतला रहा था। उस भूमि पर अपना–अपना स्वामित्व जतलाने के लिए दोनों ही क्रोध से लाल–पीले हो रहे थे। अपने–अपने पक्ष में दलीलें दे रहे थे।

संत महात्मा तो स्वभाव से ही दयालु एवं परोपकारी होते हैं। सदैव सबका भला ही चाहते हैं। उन्होंने मन ही मन विचार किया कि ये दोनों लड़ाई–झगड़ा करके व्यर्थ ही अपने प्राण गँवाने पर तुले हुए हैं। अतएव इन्हें समझा–बुझाकर शांत करने और इनका आपस में समझौता कराने का प्रयास करना चाहिए । यह सोचकर वे उनके निकट गए और उन्हें संबोधित करते हुए बोले – हे भद्र पुरुषों ! तुम लोग कौन हो और आपस में झगड़ा क्यों कर रहे हो ?

महात्मा जी को देखकर उनमें से एक व्यक्ति बोला – महात्मन् ! हम दोनों भाई हैं। हमारे पिता ने मरते समय अपनी सम्पत्ति का जो बँटवारा किया था, उसके अनुसार इस भूमि का मालिक मैं हूँ, फिर भी यह व्यर्थ ही झगड़ा कर रहा है। दूसरा व्यक्ति तत्काल चिल्ला उठा – महाराज यह बिल्कुल झूठ बोल रहा है। यह भूमि इसके भाग में नहीं, बल्कि मेरे भाग में आती है, इसलिए इसका असली मालिक मैं हूँ। यह झूठमूठ ही इसे अपनी बतलाकर और मुझे डरा–धमका कर इसे हड़पना चाहता है।

महात्माजी ने शांतभाव से फरमाया – तुम दोनों ही इस भूमि को अपना कहते हो और अपने–अपने पक्ष में दलीलें देते हो। ऐसे तो इसका निर्णय कभी नहीं होगा। इसलिए अच्छा यही रहेगा कि जिस भूमि के लिए तुम दोनों मरने–मारने पर उतारू हो, उससे ही यह बात पूछ लो कि उसका असली मालिक तुम दोनों में से कौन है ? वह स्वयं ही इस बात का निर्णय कर देगी।

कुछ पल तक दोनों महात्मा जी के मुख की ओर ताकते रहे, फिर बोले – किन्तु यह कैसे संभव है ? भूमि भी कभी बोलती है!

महात्मा जी ने उत्तर दिया, हाँ वह अवश्य बोलती है, परन्तु उसकी आवाज़ तुम लोग नहीं सुन सकते, हम सुन सकते हैं, किन्तु यह बताओ कि भूमि जो भी निर्णय देगी, क्या वह तुम दोनों को मान्य होगा ?

दोनों भाई इस बात पर राज़ी हो गए। तब महात्मा जी बोले – मुझे बहुत जोरों की भूख लग रही है। पहले मुझे भोजन कराओ।

वे बोले – भूमि का निर्णय हो जाए, फिर आपको डटकर खाना खिलाएँगे।

महात्मा जी ने कहा – भूमि का निर्णय तो हो ही जाएगा, वह कहीं भागे थोड़े ही जा रही है। पहले भोजन हो जाए, ताकि मन–मस्तिष्क कुछ ठिकाने आए। इसलिए तुम दोनों अपने घर से भोजन ले आओ, तब तक हम यहीं बैठे हैं। यह कहकर महात्मा जी एक पेड़ की छाया में बैठ गए।

दोनों भाई घर गए और अपने–अपने घर से भोजन बनवाकर ले आए। महात्मा जी ने उन दोनों को बैठ जाने को कहा। तत्पश्चात् उन्होंने भोजन के तीन भाग किए और दोनों भाइयों को भोजन करने का आदेश देकर स्वयं भी भोजन करने लगे। इस प्रकार ऊपर की सब बातचीत तथा भोजनादि में लगभग दो घंटे लग गए। महात्मा जी की इस समस्त कार्यवाही का उद्देश्य केवल यह था कि दोनों का क्रोध कुछ कम हो जाए, ताकि उन्हें समझाया–बुझाया जा सके और हुआ भी यही। वे दोनों जब भोजन से निवृत्त हुए, तो काफी शांत थे। उन्होंने महात्मा जी के चरणों में विनय की – महाराज ! यह भूमि तो कुछ बोलेगी नहीं, इसलिए आप ही हमारा निर्णय कर दीजिए ।

महात्मा जी ने कहा– हम इस भूमि से पूछकर इसका निर्णय करते हैं। यह कहकर उन्होंने अपना कान भूमि के साथ लगाया, मानो कुछ सुनने का प्रयत्न कर रहे हों। कुछ देर तक तो वे भूमि के साथ कान लगाए रहे, फिर सीधे बैठ गए और गम्भीर वाणी में बोले – यह भूमि तो कुछ और ही कह रही है।

दोनों भाई बोले – महाराज! भूमि क्या कह रही है ? महात्मा जी ने कहा– यह भूमि कहती है कि ये दोनों व्यर्थ ही मेरे ऊपर अधिकार जमाने के लिए झगड़ा कर रहे हैं, क्योंकि मैं इन दोनों में से किसी की भी नहीं हूँ ! हाँ ! ये दोनों अवश्य मेरे हैं। मैंने इनकी कई पीढ़ियों को पाला है और जाते हुए भी देखा है।

महात्मा जी की बात सुनकर दोनों भाई बड़े लज्जित हुए और महात्मा जी के चरणों में गिर पड़े। महात्मा जी ने लोहा गर्म देखकर चोट की और उन्हें समझाते हुए कहा – तनिक विचार करो कि जिस भूमि के लिए तुम लोग आपस में झगड़ा कर रहे हो, क्या वह आज तक किसी की बनी है, जो तुम लोगों की बन जाएगी। मनुष्य मेरी–मेरी कहकर व्यर्थ यत्न करता है। यह नहीं सोचता कि इनमें से कुछ भी मनुष्य का अपना नहीं है। बड़े–बड़े छत्रपति राजा भी इन्हें अपना–अपना कहकर चले गए, परन्तु साथ क्या ले गए ? कुछ भी नहीं। वे जैसे खाली हाथ संसार में आए थे, वैसे ही खाली हाथ इस संसार से चले गए।

तुम लोग भूमि के इस छोटे से टुकड़े के लिए झगड़ा करके अपने अनमोल जीवन को नष्ट करने पर क्यों तुले हुए हो ? यह भूमि न तुम्हारी है और न ही तुम्हारी बनेगी। भूमि ही क्या संसार के जितने भी पदार्थ हैं, धन–सम्पत्ति है, मकान आदि हैं इनमें से कुछ भी तुम्हारा नहीं है। तुम्हारी अपनी वस्तु तो केवल भजन–भक्ति और तुम्हारे अच्छे कर्म है ! जो लोक–परलोक के संगी–साथी हैं, शेष सब कुछ तो यहीं रह जाता है। अतएव आपस में लड़ने–झगड़ने और मनुष्य–जन्म के मूल्यवान् समय को व्यर्थ नष्ट करने की अपेक्षा जीवन को अच्छे कर्मों और नाम–सुमिरण में लगाओ, ताकि तुम्हारा लोक–परलोक सँवर जाए।

दोनों ने महात्मा जी के चरणों में गिर कर अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। उस दिन से सबके साथ प्रेम का व्यवहार करते हुए अपने समय को भजन–भक्ति में लगाते हुए अपना जन्म सफल करने लगे।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

उद्यत	–	तैयार
स्वामित्व	–	अधिकार
संपत्ति	–	धन, दौलत
हड़पना	–	गायब कर जाना, अनुचित ढंग से ले लेना
मूल्यवान	–	कीमती
संसार	–	दुनिया
तनिक	–	थोड़ा

उच्चारण के लिए

तत्काल, बिल्कुल, उद्यत, दलीलें, तत्पश्चात्, बँटवारा

सोचें और बताएँ

(1) लड़ाई झगड़ा कौन कर रहे थे ?

(2) दोनों भाई किसके लिए झगड़ा कर रहे थे ?

(3) दोनों भाइयों को किसने समझाया ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(अ) दोनों भाई क्या कर रहे थे –

(अ) हँसी–मजाक (ब) लड़ाई–झगड़ा

(स) बातचीत (द) खाना खा रहे थे ( )

(ब) महात्मा जी के लिए दोनों भाई क्या लाए ?

(अ) सोना (ब) फल

(स) भोजन (द) कपड़ा ( )

2. महात्मा जी ने झगड़ा रोकने के लिए दोनों भाइयों को क्या राय दी ?
3. भोजन बनवाकर मंगवाने के पीछे महात्मा जी का क्या उद्देश्य था ?
4. महात्मा जी के अनुसार धरती ने क्या कहा ?
5. दोनों भाई लज्जित क्यों हुए ?
6. महात्मा जी ने दोनों भाइयों को क्या समझाया ?

भाषा की बात

पाठ में उद्धृत मुहावरा – **''लाल पीला होना''** का अर्थ **''अत्यधिक क्रोधित होना''** है। वाक्य प्रयोग ''दोनों भाई धरती के स्वामित्व को लेकर लाल पीले हो रहे थे। इसी प्रकार आप भी नीचे लिखे मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करें –

(1) नौ दो ग्यारह होना (2) पसीना–पसीना होना

यह भी करें–

- किसने क्या–क्या कहा ?

  भाई ने भाई से ....

  महात्मा ने भाइयों से ....

  भूमि ने महात्मा से..

- आप भी इसी प्रकार के प्रेरक प्रसंगों का संकलन कर अपने विद्यालय की बालसभा व प्रार्थना सभा में सुनाएँ ।

संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है। –स्वामी शिवानंद

केवल पढ़ने के लिए

क्यों देते हैं नारियल की भेंट ?

प्रकृति ने न जाने कितनी तरह के पेड़–पौधे, फल–फूल, वनस्पतियाँ आदि हमारे लिए दिए हैं। अलग रंग, अलग स्वाद, अलग आकार और अलग स्वभाव के ये फल–फूल प्रकृति के अनोखे उपहार हैं ।

इनमें नारियल कुछ विशेष है। इसमें कुछ ऐसे गुण हैं जो इसे विशेष बनाते हैं। नारियल का ऊपरी भाग रूखा–सूखा, खुरदरा एवं अरुचिकर होता है। उतना ही उसका भीतरी भाग नरम, सरल, रुचिकर व हितकारी होता है। एक सच्चे इंसान का व्यक्तित्व ऐसा ही होता है। हर मानव का स्वभाव भी ऐसा ही होना चाहिए।

संघर्ष की राह चलता हुआ मनुष्य ऊपर से भले ही कठोर हो, सुंदर न लगे लेकिन भीतर से संवेदनशील बना रहे। नारियल की भेंट विभिन्न अवसरों पर दी जाती है, यही इसका रहस्य है।